भक्ति और शौर्य के अमर साधक

गुरु गोविंद सिंह

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

भक्ति और शौर्य के अमर साधक—

गुरु गोविंद सिंह

उस समय गुरु तेग बहादुर गद्दीनशीं थे। गुरु नानक देव की तरह यह भी पहुँचे हुए संत थे। बहुत कम बोलते थे। कभी-कभी तो कई-कई दिन तक मौन रहा करते थे। भगवान् का भजन और देश-जाति का उद्धार—यही दो उनके चिंतन के विषय थे।

उन दिनों भारत पर मुसलमानों की राजसत्ता थी। हिंदुओं का धर्म और उनके मान-सम्मान का बलात् अपहरण किया जा रहा था। जो-जो प्रदेश मुसलमान शासकों के अधीन थे, उनमें हिंदू-धर्म और हिंदू-देवस्थान सुरक्षित न थे।

मुसलमानों के अत्याचार और आतंक से त्रस्त एक बार बहुत से कश्मीरी पंडित गुरु तेगबहादुर के पास आये और निवेदन किया—"महराज अब तो आतंक और अत्याचार पराकाष्ठा को पार कर गया है। धन लूटा जा रहा है, धर्म भ्रष्ट किया जा रहा है और दिन-दहाड़े बहू-बेटियों का सम्मान नष्ट किया जा रहा है, हम सब आपकी शरण में आये हैं। कृपया हमारी रक्षा कीजिये।"

गुरु तेगबहादुर आगुतकों की करुण कथा सुनकर गंभीर होकर कुछ सोचने लगे। कुछ क्षण ध्यानावस्थित रहकर उन्होंने आँखें खोलीं और बोले—"अत्याचार का अंत बलिदान द्वारा होता है। समय किसी महान् व्यक्ति का बलिदान चाहता है। यदि कोई महान् पुरुष देश-धर्म की रक्षा में अपना बलिदान दे दे, तो निश्चय ही देश में जागरण आ जाये और बलिदान की परंपरा चल पड़े। बलिदान की धारा अनाचार को ठंडा कर देती है।"

उपाय सुनकर सभी लोग मौन होकर असमंजस में पड़ गये। सोचने लगे—ऐसा महापुरुष कौन हो सकता है ? जिसका उत्सर्ग देश-धर्म की रक्षा में हेतु बन सकता है ? धर्म की रक्षा के लिए तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई सच्चा धर्मात्मा ही बलिवेदी का पुण्य-पुष्प बनना चाहिए। गुरु तेगबहादुर ध्यानमग्न थे और अन्य लोग एक-दूसरे का मुँह देख रहे थे।

तभी गुरु तेगबहादुर के पाँच वर्षीय पुत्र गोविंदराय, जो उस समय पिता की सेवा में उपस्थित थे, खड़े हुए और हाथ जोड़कर बोले—"पूज्य पिताजी ! इस समय आपसे बड़ा महापुरुष और कौन है ? जो अपना बलिदान देकर देश-धर्म की रक्षा कर सके ?"

बालक गोविंदराय की बात सुनकर सभी लोग स्तंभित रह गये, किंतु गुरु तेगबहादुर गद्‌गद् हो उठे। उन्होंने पुत्र को उठाकर गले लगा लिया और बोले—"गोविंद, मैं तुझ-सा पुत्र पाकर आज धन्य हो गया। तूने मुझे प्रकाश दिया, पथ-निर्देश दिया। दूसरों को बलिदान का मार्ग बतलाकर स्वयं एक ओर बैठा रहना एक विडंबना है। 'समय किसी महात्मा का बलिदान चाहता है"—यह कहने के साथ ही मुझे आत्मोत्सर्ग के लिए प्रस्तुत हो जाना चाहिए था। दूसरे को उपदेश देने से पूर्व स्वयं उस पर आचरण करना चाहिए। तुमने मेरा प्रबोधन किया और मुझे मेरे कर्तव्य का बोध बताया। निश्चय तेरा पिता होकर मैं आज धन्य हो गया।"

इतना कहकर वे उठे और आगंतुकों से बोले—"दिल्ली के बादशाह औरंगजेब से जाकर कह दो कि यदि हमारा गुरु मुसलमान हो जाए तो हम सब मुसलमान हो जाएँगे।" कश्मीरी पंडित उन्हें प्रणाम करके दिल्ली की ओर रवाना हो गये।

गुरु तेगबहादुर का यह उपाय शत-प्रतिशत उनके प्राणों के लिए संकट था, पर साथ ही यह भी निश्चित था कि औरंगजेब हजारों-लाखों हिंदुओं को सरलता से मुसलमान बनाने के लिए उन पर अत्याचार करना छोड़कर अपने प्रयत्न गुरु तेग बहादुर तक ही केंद्रित कर देगा। इस प्रकार अपने को संकट में डालकर दूसरों की रक्षा करने का जो उदाहरण गुरु तेगबहादुर ने उपस्थित किया—वह निश्चय ही अनुकरणीय है।

पुत्र की एक ही बात से उसके गुणों की परख करके गुरु तेगबहादुर ने अपनी गद्‌दी उसको सौंप दी और चुने हुए पाँच शिष्यों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को लेकर स्थान-स्थान पर लोगों को धर्म का उपदेश देते और उसकी रक्षा में मर-मिटने का संदेश देते हुए स्वयं ही दिल्ली जा पहुँचे। औरंगजेब को उनकी चुनौती पहले ही मिल चुकी थी और अब उनके दिल्ली आने का समाचार भी मिल गया। वह बड़ा खुश हुआ। सोचा, शिकार आप से आप पिंजड़े में आ गया है।

प्रायः लोग मनुष्य के मानसिक अस्तित्व को अपने से तौलने की भूलकर बैठते हैं और उसे अपने जैसा ही मानने लगते हैं। औरंगजेब का विचार था—कोई बड़ा लालच अथवा बड़ा भय दिखलाने से गुरु तेगबहादुर विचलित हो जायेंगे और तब उनको धर्मभ्रष्ट कर लाखों-करोड़ों हिंदुओं को आसानी से मुसलमान बना लिया जायेगा। किंतु वह क्या जानता था कि जिस महापुरुष ने अकाल पुरुष से तादात्म्य स्थापित कर लिया है, जिसने धर्म और जाति की रक्षा के लिए खुशी-खुशी सिर में कफन बाँध लिया है और जों तीर्थ-यात्रा की भावना से बलिदान के पथ पर चल दिया हो, उसे अपने ध्येय और सिद्धांत से च्युत नहीं किया जा सकता।

दिल्ली जाकर गुरु तेगबहादुर ने अपना आसन जमा दिया और धर्म-प्रचार करने लगे। औरंगजेब एक भद्र पुरुष की भाषा लेकर उनसे मिला और बोला—"सुना है, आप बड़े दानिश्ता और पहुँचे हुए फकीर हैं। मैं आपका मुरीद होना चाहता हूँ। अगर आप मुसलमान होकर इस्लाम पर ईमान ले आयें, तो न सिर्फ मैं बल्कि मेरी सारी मिल्लत आपकी मुरीद हो जाए और तब आप हिंदुस्तान की सल्तनत, उसके तख्त और ताज के मालिक माने जाने लगेंगे।"

अपनी तराजू से तोलने के कारण औरंगजेब समझ रहा था कि गुरु तेगबहादुर इतनी इज्जत और इतने बड़े रुतबे के लालच में आये बिना न रह सकेंगे। राज्य के लिए अपने बहुत से भाइयों को मारकर बाप को कैदखाने में डाल देने वाला औरंगजेब इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि अध्यात्म-धन से धनी महात्माओं के लिए उसकी एक तुच्छ-सी सल्तनत क्या, त्रिलोकी का राज्य भी तृण के समान होता है। जो देश-जाति की रक्षा में अपना समर्पण कर चुका है, उसको और किन्हीं बातों से क्या सरोकार ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु तेगबहादुर ने औरंगजेब का कथन सुना, जानते तो थे ही कि वह कहाँ से बोल रहा है ? उसके इस प्रस्ताव के पीछे कौन सा भाव छिपा हुआ है ? वह मुस्कराये और बोले—"बादशाह ! मुझे लोभ दिखलाने का प्रयत्न न कर। मैं तो उस एक अकाल पुरुष की आज्ञा का वशवर्ती बंदा हूँ। तू यदि वास्तव में मुरीद होना चाहता है तो ताज और तख्त पर लात मारकर फकीरी ले ले और मेरे पास चला आ।"

गुरु की यथार्थ अभिव्यक्ति सुनकर औरंगजेब का नकली रंग उत्तर गया और वह अपने असली रूप में आकर उसी के अनुसार आचरण करने लगा। उसने गुरु के साथ आये शिष्यों को असहनीय यातना देकर मुसलमान बनाना चाहा, किंतु वे वज्रविश्वासी रंचमात्र भी विचलित न हुए। अंत में उसने गुरु तेगबहादुर को बुलवाया और उसके सामने ही उनके प्यारे शिष्य मतिदास को आरे से चिरवाकर दो टुकड़े करा दिया और भाई दयालदास को तेल के खौलते कढ़ाव में डलवाकर उबलवा दिया और बोला—"अगर अब भी आप मेरी बात न मानेंगे तो आपकी भी यही हालत बनवा दूँगा।"

गुरु तेगबहादुर ने सब कुछ समभाव से देखा, सुना और उत्तर दिया—"औरंगजेब ! यह कोई नहीं बात नहीं है। यह नश्वर शरीर आज तक किसी का नहीं हुआ। किसी न किसी बहाने इसे नष्ट तो होना ही है। धर्म के नाम पर बलिदान हो जाने से बढ़कर इस मानव-मिट्टी का और क्या महत्त्व हो सकता है ? तूने इन दोनों को मारकर केवल अपने ऊपर कलंक ही लिया है। आने वाली मानव-संतानें जहाँ तेरी इस अमानवता पर थूकेंगी, वहाँ इन धर्म-वीरों के बलिदान के प्रति नत-मस्तक होंगी। तू न जाने किस बात पर गर्व करता है ? तेरे ऐसे न जाने कितने संसार में आये और अपना इतिहास बिगाड़कर चले गये। यदि तू मुझे भी इनके पुण्य-पथ पर भेजना चाहता है तो जल्दी कर। यह आत्मा अजर-अमर है, तू इसका बाल भी बाँका नहीं कर सकता।"

गुरु का गंभीर प्रवचन सुनकर औरंगजेब बौखला उठा। उसने तुरंत ही चौराहे पर उनका सिर काटने की आज्ञा दे दी। जिसका पालन चाँदनी चौक के बीचों-बीच मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी, संवत्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१७३२ को दिन के खुले उजाले में किया गया। उस समय लाखों लोग उस महान् बलिदान को देखने के लिए इकट्ठे हो गये थे। गुरु का सिर शरीर से अलग होते ही जहाँ अत्याचार के पक्षपातियों के हृदय में एक दहशत बैठ गई, उनकी आँखों और आत्मा में एक अंधेरा छा गया वहाँ धर्म पक्ष वालों को एक आलोक मिला, उनकी आँखों में आँसू और आत्मा में साहस का स्रोत लहरा उठा। इसी अंधकार और जन-कोलाहल के बीच भाई जीवनदास ने गुरु का सिर उठा लिया और आनंदपुर की ओर चल दिये। बस, इसी बलिदान की पृष्ठभूमि से गुरु गोविंद सिंह का महान् चरित्र प्रारंभ होता है।

गुरु गोविंद सिंह को पिता का सिर सत्य की साक्षी के समान मिला और साथ ही यह समाचार भी कि औरंगजेब ने दिल्ली के समस्त संभ्रांत नागरिकों के अनुरोध करने पर भी गुरु का शरीर देने से इनकार कर दिया और कहा कि ऐसे हठीले आदमी की लाश न दफनाई जायेगी और न जलाई जायेगी। यह यों ही चौराहे पर पड़ी-पड़ी सड़ने के लिए छोड़ दी जायेगी, जिसे कौवे, गीध और कुत्ते नोंच-नोंच कर खायेंगे, जिससे लोगों को नसीहत होगी कि बादशाह की बात न मानने वालों की यह हालत होती है।

धीर पिता के वीर पुत्र गोविंद सिंह सिर और समाचार पाकर उल्लास और उत्साह से भर उठे और दिल्ली की ओर हाथ उठाकर बोले—"ऐ अनीति और अत्याचार की तस्वीर और धर्म के द्वेषी सावधान हो जा ! वक्त की मांग पूरी हो चुकी है। एक महान् पुरुष ने बलिदान दे दिया। अत्याचारों का घड़ा भर चुका है और अब देश-धर्म के उद्धार का समय आ गया है। गुरु का एक बलिदान लाख-लाख बलिदान बनकर फलेगा। उनके रक्त की एक-एक बूँद एक-एक अंगार बनकर अत्याचार और अत्याचारी दोनों को जला डालेगी।"

अनंतर वह पांच-छह वर्ष का बालयोद्धा गुरु की मृत्यु से उदास खड़े सैकड़ों लोगों की ओर उन्मुख होकर बोला—"यह दुःख नहीं, हर्ष का दिन है। आज गुरु के बलिदान ने हमें शिक्षा दी है कि हम उनके पद-चिह्नों पर चलकर देश और जाति की रक्षा करें। मुझे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूरा विश्वास है कि आप सब और आप जैसे हजारों-लाखों गुरु के बलिदान को सार्थक करने के लिए कटिबद्ध हो जायेंगे और आज से मेरे पास आने वाला हर व्यक्ति अपने साथ एक हथियार लायेगा। लोहा लोहे से ही कटेगा। काँटा काँटे से ही निकलेगा और विष का उपचार विष ही माना गया है। अब धर्म की रक्षा—शास्त्र से नहीं, शस्त्र से होगी। आज देश, जाति के बच्चे-बच्चे को एक वीर सिपाही बनना होगा। आज धर्म की रक्षा में, मैं संत परंपरा की गद्दी पर होने पर स्वयं शस्त्र उठाता हूँ और सबको अनुमति और आज्ञा देता हूँ कि वे किसी भी जाति और किसी भी वर्ण के क्यों न हों, क्षात्र-धर्म को अंगीकरण करें और अत्याचार के विरुद्ध हथियार उठायें। गुरु का शरीर दिल्ली के चौराहे पर पड़ा आप लोगों की भक्ति और साहस की प्रतीक्षा कर रहा है। क्या कोई उसको यहाँ लाकर अपनी धर्म-निष्ठा की परीक्षा देने के लिये अग्रसर होगा ? अन्यथा पुत्र और शिष्य होने के नाते मैं तो उसे लाऊँगा ही।"

सारी सभा में उत्साह फैल गया और सैकड़ों एक साथ गुरु का शरीर लाने के लिए तैयार हो गये। तभी एक वृद्ध हाथ जोड़कर खड़ा हुआ और बोला—"सारी सभा से और गुरुजी से मेरी अरदास है कि मैं एक नीच जाति का आदमी हूँ, यदि कोई हर्ज न समझा जाये तो गुरु का शरीर लाने की आज्ञा मुझे दी जाए। इस सेवा से मेरी कुछ करनी बन जायेगी।"

गुरु गोविंद सिंह उस वृद्ध की बात सुनकर गद्‌गद् ही उठे और और सोचने लगे जहाँ समाज में नीच कहे जाने वाले लोग इस प्रकार धर्म की सेवा करने को तत्पर हो उठे हैं, वहाँ अब जाति के उद्धार में कोई संदेह नहीं रह जाता। वे सराहना करते हुए उस वृद्ध से बोले—"भाई, उस अकाल पुरुष की दृष्टि में सब बराबर हैं, न कोई ऊँच है और न नीच; और जब आप पुण्य का इतना बड़ा काम करने को तैयार हैं, तब अपने को नीच क्यों कहते हैं ? नीच तो वह होता है, जो संकटकाल में देश-धर्म की रक्षा करने से मुँह चुराता है। मैं आपके गुरु का शरीर लाने की अनुमति देता हूँ—खुशी से जाओ। भगवान् आपकी सहायता करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह वृद्ध अपने पुत्र को साथ लेकर दिल्ली की ओर चल दिया। दिल्ली की सीमा समीप आने पर उन पिता-पुत्र को एक गाड़ीवान् मिला। तीनों में बातें होने लगीं। गाड़ीवान् हिंदू था। उसे जब यह पता चला कि वे दोनों बाप-बेटे आनंदपुर से आ रहे हैं, तब उसने गुरु गोविंद सिंह का समाचार पूछा तथा गुरु तेगबहादुर के बलिदान और औरंगजेब के अत्याचार की चर्चा की। बात करते समय गाड़ीवान् का गला भर आया। वह बोला ! गुरु का शरीर चाँदनी चौक के चौराहे पर पड़ा है। बादशाह उसे किसी को ले ही नहीं जाने देता है, जिससे उनकी विधि से अंत्येष्टि की जाए। अब तो यह सब देखा नहीं जाता। दसवें गुरुजी समर्थ हों और धर्म-रक्षा का संग्राम छेड़े तो फिर अत्याचारी के विरुद्ध जमकर लोहा लिया जाए। मैं तो उस दिन की राह देख रहा हूँ कि कब धर्म-जाति पर बलिदान होने का अवसर मिले।

उन दोनों बाप-बेटों को गाड़ीवान् की बात सुनकर बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा कि अब अत्याचार के विरुद्ध जन-जन में रोष जाग उठा है। धर्म युद्ध के लिए लोग तैयार हो गये हैं। जल्दी ही अत्याचार का अंत हो जायेगा। फिर बूढ़े ने दिल्ली आने का मंतव्य बतलाया। गाड़ीवान् ने तुरंत कहा—अब मुझे और कहीं नहीं जाना है। आप लोगों के साथ सीधे दिल्ली को चलूँगा और आप लोगों के गुरु का शरीर लाने में सहायता करूँगा। पूरी दिल्ली मेरी देखी हुई है। वे तीनों सीधे चाँदनी चौक की ओर चल दिये।

अंधेरा हो चला था और संयोग से शव के प्रहरी उस समय वहाँ पर नहीं थे। तीनों ने तुरंत अवसर का लाभ उठाया और गुरु का शरीर गाड़ी में रखकर छिपा दिया। अब सोचा यह गया कि गुरु के शरीर के स्थान पर कोई शरीर होना चाहिए, जिससे जब प्रहरी आयें तो उन्हें कोई संदेह न हो और हम लोगों की खोज में दौड़-धूप न मच जायें—नहीं तो हम लोग आनंदपुर न पहुँच पायेंगे और शरीर के साथ गिरफ्तार कर लिए जायेंगे और तब इस प्रकार अपना उद्देश्य पूरा न हो सकेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस विचार पर उन तीनों में से हर एक कहने लगा कि मुझे सिर काटकर गुरु के स्थान पर डाल दिया जाए। इस पर दोनों बाप-बेटों ने तो गाड़ीवान् को बिल्कुल ही मना कर दिया और कहा—आपके लिए बलिदान के हजार अवसर आयेंगे तब तक के लिए जीवित रहो और यथासंभव धर्म-रक्षा की भावना का प्रचार करते रहो। इसके बाद पिता-पुत्र में विवाद छिड़ गया। पिता कहता था कि मुझे बलिदान किया जाए और पुत्र कहता था कि मुझे। विलंब हो रहा था। प्रहरियों के आ जाने का डर था। निदान पिता ने पुत्र को समझाया कि मेरा शरीर अब बूढ़ा हो गया है। कोई बड़ी सेवा नहीं कर सकता ! तुम अभी जवान हो। आगे गुरु गोविंद सिंह के नेतृत्व में धर्म-युद्ध छिड़ने वाला है। तुम जी भर उसमें भाग लेना। इस समय मेरा बलिदान ही उपयुक्त है। इतना कहकर बूढ़े ने तलवार से अपना सिर काट डाला और गुरु शरीर के स्थान पर लुढ़क गया। उन दोनों ने बूढ़े के शरीर को ढक दिया और उसका सिर गाड़ी में रखकर चल दिये। कुछ ही समय में सुरक्षित दिल्ली के बाहर निकल गये।

आनंदपुर आकर पुत्र ने गुरु का शरीर गुरु गोविंद सिंह की भेंट कर दिया और अपने पिता के बलिदान की कथा बताई। गुरु गोविंद सिंह ने बूढ़े का सिर लेकर छाती से लगाया और कहा, जिस जाति में धर्म पर बलिदान हो जाने की इतनी गहरी भावना भर गई हो, वह बहुत दिनों तक पतित और पीड़ित नहीं रह सकती। उसके बाद गुरु गोविंदसिंह ने पिता और उस बलिदानी वृद्ध की यथोचित अंत्येष्टि कराई और पूरी तरह से अपने धर्म कर्तव्य में लग गये।

पिता के अंतिम संस्कार से निवृत्त होकर गुरु गोविंद सिंह ने एक सभा बुलाई। यद्यपि उस समय उनकी आयु सात वर्ष की ही थी। किंतु सच्ची धार्मिकता और धर्म-जाति की रक्षा की ज्वलंत-भावना ने उनके अंदर अपूर्वशक्ति, शौर्य, प्रभाव तथा तेज भर दिया था। सत्य तथा सत्कर्मों का अवलंबन करने से मनुष्य की अंतरात्मा में प्रसुप्त शक्तियाँ स्वतः ही प्रबुद्ध हो उठती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभा का उद्‌बोधन करते हुए उन्होंने कहा—"यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि इस समय हिंदू-धर्म पर संकट छाया हुआ है। यवन शासक उसको आमूल नष्ट कर देने पर तुले हैं। तलवार के बल पर शिखा और सूत्र उतारे जा रहे हैं। मंदिर, मठ और शिवालय तोड़े जा रहे हैं। गऊओं का संहार किया जा रहा है। बहू-बेटियों की लाज लूटी जा रही है। हिंदू राजा स्वार्थ, भोग-विलास और पारस्परिक द्वेष से जर्जर हो रहे हैं। अपना जीवन सुखपूर्वक काटने के लिए न जाने कितने तो यवन शासकों के तलवे चाट रहे हैं। ऐसी अंधकार की स्थिति में हिंदुओं को अपनी-अपनी बहू-बेटियों और अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने पैरों पर खड़ा होना और अपनी भुजाओं पर भरोसा करना होगा। अब तक के शांतिपूर्ण बलिदान से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि आततायी शासक प्रतिहिंसारहित बलिदान को कोई भी महत्त्व नहीं देना चाहते। उनके हृदय में हिंदुओं का शांतिपूर्ण बलिदान दया के अंकुर नहीं उगा पाया। उनका हृदय ऊसर की तरह नीरस और कठोर है, उसमें किसी प्रकार की सदाशयता और कोमल भावना का अंकुरण नहीं हो सकता। हमारी शांति और निर्द्वेष भावना को कायरता तथा मूर्खता समझा जा रहा है। इसलिए जरूरत है कि अब 'शठे शाठ्यम् समाचरेत्' की नीति अपनाई जाए और तलवार के विरुद्ध धर्म की रक्षा तलवार से की जाए। आज मेरे साथ मिलकर कौन यह प्रतिज्ञा करता है कि, जब तक शरीर में एक भी श्वास आता-जाता रहेगा, रक्त की एक भी बूँद बाकी रहेगी तब तक धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करते रहेंगे ?"

गुरु गोविंद सिंह का वाक्य पूरा होते ही सभा में सैकड़ों तलवारें एक साथ म्यान से बाहर आकर चमक उठीं। गुरु गोविंद सिंह ने 'सत्‌श्री अकाल' के उद्‌घोष के साथ फिर कहा, भाइयों ! आज देश की जन-शक्ति जागी है। लेकिन इस जगी हुई जनशक्ति को एक तन, मन से संगठित होकर अजेय बन जाना है और एक नारा, एक निशान और एक नेता को लेकर चलना है। यदि अपने उद्‌देश्य के प्रति हम सब एक निष्ठावान् रहें तो निश्चय ही आततायियों को परास्त कर उन्हें ठीक रास्ते पर आने के लिए विवश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर सकेंगे। इस प्रकार देखते ही देखते धर्मवीरों का एक विशाल संगठन बनकर खड़ा हो गया।

अब संगठन का सूत्रपात कर देने के बाद गुरु गोविंद सिंह ने उसका मानसिक तथा बौद्धिक विकास करने के लिए शिक्षा प्रचार का कार्य शुरू किया। उसके लिए उन्होंनें सैकड़ों विद्वानों तथा शिक्षकों को नियुक्त किया। जहाँ उन्होंने हिंदी, संस्कृत और फारसी आदि अनेक भाषाएँ पढ़ी; वहाँ जनता को भी पढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सैकड़ों अनुयायियों को विद्याध्ययन के लिए काशी भेजा। जो वहाँ से विद्वान् तथा धर्मज्ञ बनकर आये और जनता में शिक्षण का काम करने लगे।

इसके अतिरिक्त जनता में धार्मिक प्रबोधन तथा उच्चादर्श का जागरण करने के लिए उन्होंने जगह-जगह रामायण, महाभारत तथा भागवत की कथाएँ बिठाई और निरंतर उनका वाचन कराया। प्रशिक्षित पंडित जनता को भगवान् राम, भगवान् कृष्ण तथा अन्य महापुरुषों के चरित्र की व्याख्या करते हुए जनता को वैसा बनने की प्रेरणा देते।

उन्होंने जनता में चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, स्कंदगुप्त तथा अशोक जैसे राजाओं के इतिहास का प्रचार किया और हतोत्साह हिंदू-जाति को अपने अतीत गौरव का भान कराया, जिससे जाति को अपने विराट् स्वरूप का ज्ञान हुआ और उसका दैन्य दूर होने लगा।

गुरु गोविंद सिंह ने भगवती दुर्गा का विशाल यज्ञ आयोजित किया। जिसमें देश के बड़े-बड़े पंडित तथा संभ्रांत लोगों को आमंत्रित और उन्हें धर्म रक्षा के लिए निर्मित उनके संगठन को सहयोग करने की प्रेरणा दी। इस यज्ञ में लोगों ने गुरु गोविंद सिंह को लाखों का धन और हजारों घोड़े, अस्त्र-शस्त्र तथा प्रचुर युद्ध सामग्री भेंट की और आगे भविष्य में भी तन, मन, धन और जन से सहायता करने की प्रतिज्ञा की।

यज्ञ पूरा करने पर गुरु गोविंद सिंह ने जन-समूह के सम्मुख आकर कहा—अब आप लोग इस यज्ञ की अधिष्ठात्री देवी, भगवती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्गा के दर्शन कर लीजिए, आज जिसकी उपासना करने से ही धर्म और जाति की रक्षा हो सकती है। इतना कहकर उन्होंने अपनी तलवार निकालकर चमकाई और फिर कहा—"धर्म-रक्षा में उठाई योद्धा की कृपाण ही भगवती दुर्गा का सच्चा स्वरूप होती है। सत् की रक्षा और असत् के विनाश के लिए उठाई हुई तलवार में भगवती की शक्ति और देवी का तेज समाहित हो जाता है। जो वीर पवित्रता के साथ इस शक्ति का प्रयोग करता है, वह इस जीवन में विजयी होता है और उत्सर्ग हो जाने के बाद परधाम पाता है। इसलिए जब तक धर्म सुरक्षित नहीं हो जाता, देश से अनीति तथा अत्याचार का उन्मूलन नहीं हो जाता तब तक आप सबको और अन्य सभी को इसी साक्षात् तलवार भवानी की उपासना करनी है।" गुरु गोविंद सिंह के इस यज्ञ और उद्घोष ने जन-जन के हृदय में वीरता, उत्साह और साहस का सागर लहरा दिया और सबने अपनी-अपनी कृपाण निकालकर धर्म के नाम पर मर-मिटने की प्रतिज्ञा की।

धर्माभियान प्रारंभ करने से पूर्व बुद्धिमान् गुरु ने जन भावना की परख करने के विचार से संवत् १७५५ के चैत्र मास में एक बड़ा विराट् समारोह किया और उसमें सभी को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। उस उत्सव में हजारों लोग आये। गुरु गोविंद सिंह ने उनका आदर, सत्कार किया और उनके भोजन तथा विश्राम-निवास का समुचित प्रबंध किया।

प्रमुख सभा के दिन गुरु गोविंद सिंह जन समुदाय के सम्मुख नंगी तलवार लिए हुए आये और बोले—"भाइयों ! आज देवी दुर्गा ने बलिदान माँगा है। क्या आप में से कोई ऐसा वीर है, जो देवी की प्रसन्नता के लिए अपना सिर दे सके ? सभा में कुछ देर सन्नाटा छाया रह। गुरु ने फिर कहा—"क्या देवी की माँग पूरी नहीं होगी ? तभी एक तीस वर्षीय तरुण उठा और बोला—"मैं अपना सिर देवी को भेंट करने को तैयार हूँ"। यह लाहौर के निवासी भाई दयाराम खत्री थे। गुरु गोविंद सिंह उन्हें एक बंद तंबू में ले गये और एक मुहूर्त्त ही में लोगों ने तंबू के बाहर रक्त की धारा बहते हुए देखी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु गोविंद सिंह फिर हाथ में रक्त से सनी तलवार लेकर आये और बोले—देवी और बलिदान चाहती है। क्या दूसरा कोई व्यक्ति अपना सिर देने को तैयार है ? तभी तैंतीस वर्षीय दिल्ली निवासी भाई धर्मदास जाट ने आगे आकर सिर झुका दिया। गुरु उन्हें भी तंबू में ले गये और रक्त की दूसरी धार बहती दिखाई दी। तीसरी बार बार गुरु ने आकर फिर वही माँग की। अब की बार ३६ वर्षीय मोहकमचंद धोबी आगे आये ! गुरु उनको भी तंबू में ले गये और एक बार फिर तंबू के बाहर रक्त की धार बहती दिखलाई दी। इसी प्रकार गुरु गोविंद सिंह ने दो-बार और आकर बलिदान की माँग की और दोनों बार क्रम से सैंतीस वर्षीय बीदर-निवासी भाई साहबचंद नाई और अड़तीस वर्षीय जगन्नाथ निवासी भाई हिम्मतराय कुम्हार ने अपना सिर देना स्वीकार किया और उन दोनों की वही दशा हुई, जो प्रथम तीन की हुई थी। अब तो बलिदान भावना से सारा जन समूह ही उमड़ पड़ा और हमारा सिर लीजिये, हमारा सिर लीजिये, कहकर अनुरोध करने लगा।

तभी लोगों ने देखा कि वे पाँचों वीर बलिदानी सुंदर वेष-भूषा में तलवार लिए गुरु के साथ सभा मंच पर आ गये। लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वास्तविक बात यह थी कि गुरु गोविंद सिंह ने उन बलिदानियों के स्थान पर पाँच बकरों को मारकर लोगों के धैर्य तथा दृढ़ता की परीक्षा ली थी। उनका यह प्रयोग सफल हुआ और जन-गण की बलिदान भावना अटल तथा अविचल हो गई। उसी समय गुरु गोविंदसिंह ने उन पाँचों को 'पंच प्यारे' की उपाधि देकर सिंह पद से उनके नाम विभूषित कर जन समुदाय को निर्देश दिया कि आज से आप लोग आपसी वीर भावना के लिए सिंह कहलायेंगे और अपने उद्देश्य के अनुरूप कृपाण, कड़ा, केश, कंघा और कच्छा—ये पाँच चिह्न सदैव अपने पास रखेंगे।

उसी समय गुरु गोविंद सिंह ने शुद्ध जल में अपना खाँड़ा धोकर अमृत बनाया और स्वयं पीकर 'पंच-प्यारों' और अन्य सब लोगों को पिलाकर गुरुओं की पवित्र वाणी के साथ उनको खालसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाया। इस प्रकार उन्होंने देश, जाति और धर्म की रक्षा के लिए संत और शिष्य परंपरा में शस्त्र-धर्म का सूत्रपात किया और जन-गण का वही संगठन आज तक सिख नाम से चला आ रहा है।

इस प्रकार एक विशाल, सुदृढ़, सुदीक्षित और सशस्त्र संगठन बनाकर गुरु गोविंद सिंह ने अनीति और अत्याचार के विरुद्ध युद्ध और संघर्ष करना प्रारंभ कर दिया। उनके पास एक दिन एक स्त्री आई और रो-रोकर फरियाद करने लगी कि देहरादून में यवनों के एक दुष्ट दल ने उसके पति को जला डाला है और धन-संपत्ति को लूटकर उसका शील भंग किया है। गुरु गोविंदसिंह ने तुरंत पाँच-सौ घुड़सवार लिए और स्त्री के साथ जाकर अत्याचारियों को अस्तित्वहीन कर दिया और उसकी संपत्ति का प्रबंध एक भद्र व्यक्ति को सौंपकर वापस चले आये।

गुरु गोविंद सिंह के इस पुण्य अभियान में सहायता करने के लिए आसपास के अनेक राजा आने लगे। उन्होंने उनकी सहायता से लोहागढ़, फतेहगढ़, फूलगढ़ और आनंदगढ़ नाम के चार किले बनवाये और उनमें बड़े युद्ध की तैयारी करने लगे।

गुरु गोविंद सिंह के अभ्युदय का समाचार मुगल बादशाह को मिला। उसने मियाँ खाँ, अलफ खाँ और जुलफिकार खाँ नामक तीन सरदारों को एक बड़ी सेना देकर उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए भेजा। उन्होंने आते ही चंवा, नहान और नालागढ़ क्षेत्र में हत्याओं और लूटमार का सिलसिला जारी कर दिया। गुरु गोविंद सिंह को इसका समाचार मिला और वे अपनी छोटी-सी सेना लेकर आततायियों पर जा टूटे ! धर्म-सेना यवन-सेना की तुलना में बहुत ही छोटी और साधनहीन थी। तब भी जाति-धर्म के दीवाने अपने वीर नायक के नेतृत्व में इस वीरता से लड़े कि मुगल सेना के हौंसले पस्त हो गये और वहाँ से भागते ही बना।

मुगलों की इस हार का समाचार लाहौर के सूबेदार दिलावर खाँ को मिला और वह एक बड़ी सेना लेकर युद्ध करने चल दिया। उसने स्वयं तो गुरु गोविंद सिंह के पक्षपाती पहाड़ी राजाओं पर आक्रण किया और अपने लड़के को फौज देकर गुरु गोविंद सिंह को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परास्त करने के लिए भेजा। लेकिन गुरु गोविंद सिंह के तीखे तीरों और उनके सैनिकों की मार वह ज्यादा देर न सह सका और भाग खड़ा हुआ। गुरु गोविंद सिंह ने उसका पीछा किया और युद्ध का बहुत अधिक सामान छीन लिया।

अपने पुत्र रुस्तम खाँ को हारकर आया देखकर दिलावर खाँ ने बड़ी भारी सेना लेकर गुरु गोविंद सिंह पर फिर आक्रमण किया। सिख बहादुर तो मरने-मारने और अत्याचार के मिटा देने का व्रत ही ले चुके थे। वे 'सत् श्री अकाल' का नारा लगाते हुए दिलावर खाँ की सेना से भिड़ गये और देखते ही देखते यवनों को गाजर-मूली की तरह काट-काट कर फेंक दिया।

धर्म भावना से बली बने गुरु गोविंद सिंह की विजय पर विजय का समाचार सुनकर दिल्ली का सिंहासन हिल उठा। बादशाह ने शहजादे मुअज्जन को विशाल सेना देकर उनके विरुद्ध भेजा। इस समय तक गुरु गोविंद सिंह के पास बहुत कम सेना रह गई थी। इसलिए आमने-सामने युद्ध का अवसर न था। आनंदगढ़ का किला चारों ओर से बंद कर लिया गया। मुगल सेना ने दुर्ग को चारों ओर से घेर लिया। घेरे की अवधि बढ़ती गई और किले के भीतर की भोजन सामग्री घटती गई। बाहर से आने की कोई व्यवस्था नहीं हो सकती थी। अस्तु उन्होंने यही ठीक समझा कि किले में भूखों मरने के बजाय क्यों न लड़कर मर जाया जाए। निदान सिख वीर गुरु के नेतृत्व में हथेली पर जान लेकर निकल पड़े और पूरी शक्ति से मुगलों पर टूट पड़े। धर्म रक्षा की जिज्ञासा, अंतिम स्थित और संपूर्ण शक्ति से प्रयत्न का जो फल होना चाहिए था, वही हुआ। मुगल सेना सिक्ख वीरों की मार न सह सकी और भाग खड़ी हुई। बहुत-सी भोजन तथा युद्ध-सामग्री उनके हाथ लगी।

कुछ समय बाद सरहिंद के नवाब ने गुरु गोविंद सिंह पर फिर आक्रमण किया और बड़ी भारी सेना द्वारा आनंदगढ़ को घेर लिया। गुरु गोविंद सिंह ने कुछ दिन बाद फिर धैर्य से काम लिया, किंतु अंत में जब किले की खाद्य-सामग्री बिल्कुल ही समाप्त हो गई, तब वे अपने सारे अनुयायियों को लेकर के आनंदपुर से बाहर हो जाने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयत्न में किले से निकल पड़े और मुगल सेना में खंग-बल पर रास्ता बनाते हुए बढ़ते गये। पूरी शक्ति और निश्चित विचार से किया हुआ अभियान सफल हुआ और गुरु गोविंद सिंह अपने थोड़े से अनुयायियों के साथ आनंदपुर से सतलज पार कर शत्रुओं की शक्ति से बाहर हो गये।

आनंदगढ़ से निकल कर गुरु गोविंद सिंह वसूली नामक राज्य में पहुँचे। वसूली एक छोटा-सा राज्य था। वहाँ का राजा दिल्ली के बादशाह के अधीन था। वह राजा राजनैतिक दृष्टि से अधीन अवश्य था, किंतु उसके विचार तथा भावनायें स्वतंत्र थीं। उसने मन से दिल्ली के बादशाह की अधीनता स्वीकार न की थी। उसे अपने देश, जाति तथा धर्म पर बड़ी आस्था और अभिमान था।

कुछ समय तक वसूली में विश्राम और आगे की योजना बना कर गुरु गोविंद सिंह अपनी माता, पत्नी तथा चारों पुत्रों को लेकर चल दिए। स्थान-स्थान पर उपदेश और जनता में संगठन की भावना भरते हुए वे कुरुक्षेत्र आए। कुरुक्षेत्र में गुरुजी का आना सुनकर हजारों की संख्या में लोग उनके दर्शन करने के लिए आने लगे। गुरुजी अपने उपदेशों में देश, धर्म और जाति की रक्षा पर ही जोर देते थे। वे लोगों को समझाते कि—"जिस समय धर्म पर आँच आ रही हो, देश पर संकट छाया हो, उस समय मनुष्य का धर्म उसकी रक्षा करना हो जाता है। इन आपत्तियों को आस्था की परीक्षा ही समझना चाहिए। जब परमात्मा के प्यारे धर्म पर विधर्मी आघात कर रहे होते हैं, उस समय वह परम पिता चुपचाप बैठा हुआ यह देख करता है कि इस समय कौन उसके नाम और उसके धर्म पर बलिदान देने को तैयार हो रहा है ? जो बलिदान देने को कटिबद्ध होता है, परमात्मा उसका नाम अपने भक्तों में लिख लिया करता है और जो ऐसे संकटकाल में भी हाथ में माला लिए और माथे पर चंदन लगाये मूर्ति के सम्मुख ध्यान लगाने या जप करने में ही लगे रहते हैं, परमात्मा उनका नाम कायरों और बगुला भक्तों में लिख देता है। देश धर्म पर, अन्य सारी उपासनाएँ छोड़कर उत्सर्ग हो जाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाले को स्वर्ग ही मिलता है, फिर चाहे उसने पहले कभी पूजा-उपासना या मंत्र-जप किया हो अथवा न किया हो।"

जो आपत्ति आज देश और धर्म पर आई हुई है, वह सदा तो रहने वाली नहीं। इसको मिट ही जाना है। किंतु ऐसा अवश्य है कि इसके माध्यम से सच्चे आस्तिकों तथा परमात्मा के भक्तों की पहचान जरूर हो जायेगी। जिसको परमात्मा के नियम, जिसको धर्म कहा जाता है, प्यारे नहीं, वह परमात्मा को प्यार कर सकता है—इसमें संदेह है। जिसको परमात्मा का धर्म प्यारा नहीं, उसको परमात्मा का प्यार भी नहीं मिलता। आज हमारी सबकी आस्था की परीक्षा का समय आया हुआ है। आइये, हम सब यथासाध्य अपना बलिदान देकर उत्तीर्ण हों। नहीं तो न तो यवनों का यह अत्याचार बना रहेगा और न धर्म पर यह संकट। वह परम-पिता अपने धर्म की रक्षा का कोई न कोई उपाय कर ही देगा, वह हम सब कर्तव्यविमुख होकर उसकी कृपा और स्वर्ग से भ्रष्ट कर दिये जायेंगे।"

"आज हाथ में माला की नहीं, हथियार की आवश्यकता है। जिन मंदिरों में हम मूर्ति को भगवान् मानकर पूजा करते हैं और उनमें परमेश्वर की आस्था रखते हैं, उनको अत्याचारियों द्वारा टूटे हुए और नष्ट-भ्रष्ट होते हुए देखकर भी यदि हमारा हृदय तड़प नहीं उठता, हमारी रगों का रक्त गरम नहीं हो जाता, तो मानना पड़ेगा कि हमारी आस्था झूठी है, हम मंदिरों तथा मूर्तियों को ईंट, पत्थर का मकान और निर्जीव पुतला समझते हैं। आज हम जिस धर्म के अनुयायी हैं और जिसके द्वारा भवसागर से पार होने की आशा लगाये हैं, यदि वही नष्ट या भ्रष्ट हो गया, तो धर्म के किस मार्ग का अनुगमन करके हम अपने परलोक की संरचना कर सकते हैं ? धर्म न सही, यदि धर्म के अनुयायी ही बलात्कार से धर्मच्युत कर दिये, गये तो वह धर्म ही किस प्रकार जीवित रह सकता है ? आज आप लोग धर्मोपदेश के लिए मेरे पास आते हैं और चाहते हैं कि आपको कुछ ऐसी बातें बतलाऊँ, जिससे आपकी आत्मा में सुख तथा शांति का संचार हो। किंतु, आज जब धर्म, देश और जाति पर अत्याचार होते देखकर मेरी आत्मा को ही सुख-चैन नहीं है, तब मैं आपको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या उपदेश कर सकता हूँ ? आज तो सुख-शांति का एक ही मार्ग है, वह यह कि धर्म की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौछावर करके कटिबद्ध हुआ जाए। मैंने इस सत्य को अनुभव कर लिया है और अकाल पुरुष की इच्छा से धर्म रक्षा के लिए शस्त्र उठा लिए हैं। अब सच्ची शांति तो उस दिन ही मिलेगी जिस दिन या तो प्रयत्नपूर्वक आततायियों का अत्याचार समाप्त कर सकूँगा या उसी पुण्य-प्रयत्न में सर्वस्व के साथ उत्सर्ग हो जाऊँगा। आज मेरा अनुगमन और मेरा शिष्यत्व इसी में है कि सब लोग धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र ग्रहण करें, दूसरों को ग्रहण करायें और बलि पथिक बनें। इसके अतिरिक्त मेरे पास आज न कोई उपदेश है और न गुरु-मंत्र !"

गुरु के प्रेरक वचन सुनकर हजारों की संख्या में लोग उनके सैनिक तथा सहायक बन गये। गुरु गोविंदसिंह सूर्य ग्रहण के मेले तक कुरुक्षेत्र में रुके और वहाँ प्रांत-प्रांत से आए हुए लोगों को यही उपदेश तथा प्रेरणा देते रहे। कुरुक्षेत्र के मेले में आये न ज़ाने कितने नौजवान उनकी धर्म सेना के स्वयं सैनिक और प्रचारक बन गये। इतने लोगों को वेतन तथा भोजन देने के लिए धर्मानुयायियों ने बहुत साधन भी गुरु जी को भेंट किया। अनेक लोगों ने अपने उस धन से, जो वे वहाँ दान-पुण्य करने के लिए लाये थे, अस्त्र-शस्त्रों का प्रबंध कर दिया। लोगों ने उस संकटकाल में उस दान को किसी भी पुण्य से कम नहीं माना और न अपनी तीर्थ यात्रा की सार्थकता पर संदेह किया।

इस प्रकार एक विशाल संगठन और देश व्यापनीय प्रचार करके और लोगों को उनका कर्तव्य तथा मार्ग बतलाकर गुरु गोविंद सिंह चमकौर होते हुए आनंदगढ़ आ गये।

गुरु गोविंद सिंह का यह संगठन तथा प्रचार जब मुगल बादशाह औरंगजेब के कानों में गया तो उसका अस्तित्व काँप उठा। उसे अपना साम्राज्य तथा सिंहासन जाता हुआ दिखलाई देने लगा। उसकी रात की नींद और दिन का चैन हराम हो गया। सुख-चैन अन्यायी तथा अत्याचारी के कर्म में होता ही कहाँ है ? उसकी अनीति उसके हृदय में सर्प की तरह बैठी हुई फुसकार किया करती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, जिसका भय उसे बाहर अपने चारों तरफ दिखलाई देता रहता है। उसे सोते-जागते, स्वप्न और परिस्थितियों में अपना विनाश ही झाँकता दृष्टिगोचर होता है। गुरु गोविंद सिंह का उद्देश्य उसका राज्य छीनकर अपना राज्य स्थापित करने का नहीं था। उनका ध्येय था, उसका अत्याचार रोककर अपने हिंदू-धर्म की रक्षा करना। वे एक संत थे और संतों के कर्तव्य को भली प्रकार जानते थे। जिस धर्म के आधार पर संतत्व प्राप्त होता है और जिस संतत्व के आधार पर सामाजिक सम्मान, उस संतत्व का मुकुट धारण करने वाला कोई संत यदि धर्म पर संकट देखकर चुप बैठा रहता है तो उसे संत नहीं, बल्कि आडंबरी या पाखंडी ही कहना होगा। इस अपवाद तथा अपपाप से गुरु गोविंद सिंह सावधान थे और इसलिए उन्होंने माला रखकर कृपाण उठाई थी और वैसा करने के लिए ही अपने शिष्यों तथा अनुयायियों को भी प्रेरित किया था। अपने उद्देश्य पूर्ति के बाद उन्हें कृपाण रखकर फिर उपासना में ही तल्लीन हो जाना था, उन्हें न औरंगजेब से शत्रुता थी और उसके राज्य से। उन्हें क्षोभ था तो उसके अनीतिपूर्ण अत्याचार से। एक सच्चा वीतराग संत किसी से शत्रुता क्यों रखेगा ? तथापि वह संसार में किसी पर भी होते हुए अत्याचार को नहीं देख सकता। फिर इस समय तो अपने ही धर्म और अपनी ही जाति पर अत्याचार हो रहा था।

अत्याचारों के करने से औरंगजेब का विवेक भ्रष्ट हो चुका था, जहाँ उसे डरना चाहिए था, अपनी अनीति, अपने पाप और अपने क्रूर कर्मों से वहाँ वह भयभीत हो रहा था—उस संत से, जो संसार में किसी से शत्रुता नहीं मानता और न किसी को कष्ट या हानि पहुँचाना चाहता है। अपना उत्पात और अत्याचार बंद कर देने से औरंगजेब सर्वथा निःशंक हो सकता था। पर एक बार किया गया पाप सौ-बार सिर पर सवार होकर अपना अनुगमन कराया करता है। किंतु औरंगजेब के सिर तो सैकड़ों पाप सवार थे। उसको भला यह सद्बुद्धि किस प्रकार प्राप्त हो सकती थी ? अत्याचारी अनीति द्वारा ही किसी से निस्तार पाने का प्रयत्न किया करता है। अस्तु, औरंगजेब पंजाब के धर्मद्रोही और देशघाती पहाड़ी राजाओं, सरहिंद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के नवाब और सीमांत के शासकों का दल बनाकर, एक लाख सेना के साथ, गुरु गोविंद सिंह का अस्तित्व मिटाने के लिए आनंदगढ़ पर चढ़ आया।

थोड़े से साथियों के साथ आनंदगढ़ के किले में ठहरे हुए गुरु पर एक लाख सैनिकों और सैकड़ों राजाओं तथा सामंतों के साथ चढ़ आना औरंगजेब के भय तथा कायरता का बहुत बड़ा प्रमाण था। किंतु धर्म का संबल लिए उन वीर पुरुष ने जरा भी चिंता न की और आततायियों के विरुद्ध मोर्चा ले लिया। अपने साथियों द्वारा अल्पता की शंका प्रकट करने पर उन्होंने हँसकर कहा कि, मनुष्य का सत् साहस स्वयं में ही एक बड़ी सेना है। अपने-अपने हृदयों का साहस संभालो और धर्म की जय बोलकर शत्रुओं से टक्कर लो। सत्य तथा धर्म की ही विजय सदा होती रही और आज भी होगी और आगे भी होती रहेगी।

एक पखवारे तक अपने नगण्य साथियों के साथ गुरु गोविंद सिंह ने उस आततायी टिड्डी दल से घोर संग्राम किया। एक के बदले मुगलों के सौ-सौ सैनिक और सरदार मारे गये। गुरु गोविंद सिंह के धनुष से निकले बाण एक साथ अनेकों को धराशायी कर देते थे। धर्मवीरों ने दिन और रात युद्ध करके आर्य रक्त की विशेषता सिद्ध कर दी। मुगल सेना की एक बड़ी संख्या मारी गई। उसके जो सरदार मारे गये, वे तो मारे ही गये, शेष सरदारों की हिम्मत के पाँव उखड़ने लगे।

तभी दैवयोग से किले की भोजन-सामग्री समाप्त हो गयी। कई दिन तक भूखे-प्यासे रहकर युद्ध चलाया गया। पर अंत में शेष रहे चालीस सैनिकों की हिम्मत छूट गयी। उन्होंने गुरु से कहा कि, इस प्रकार भूखों मरने से अच्छा है कि एक साथ समुद्र में कूद पड़ा जाए और अपना बलिदान दे दिया जाए। गुरु गोविंद सिंह मुगलों की परिस्थिति समझ चुके थे। उन्होंने साथियों को समझाया कि मुगलों की हिम्मत उखड़ चुकी है। एक-दो दिन और धैर्य से काम लो। शत्रु भागने वाला ही है। किंतु वे सब सैनिक हिम्मत खो बैठे थे और रण में जाकर प्राण दे देने के लिए हठ करने लगे। हताश होकर गुरु ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा—"यदि आप लोग इस आड़े समय में मेरी नीति और मेरा साथ छोड़ना ही चाहते हैं तो छोड़ दीजिए। लेकिन मेरे संबंध से त्याग-पत्र देते जाइए, जिससे मैं इस अपवाद से बच सकूँ कि 'गोविंद सिंह ने स्थिति जानते हुए अपने साथियों को निश्चित मृत्यु के मुख झोंक दिया। हत्-बुद्धि सैनिकों ने त्याग-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये और अवसर पाकर शत्रु सेना को चीरते हुए आँधी-वेग से निकल गये।

अब आनंदगढ़ में रहना व्यर्थ समझकर एक रात गुरु गोविंद सिंह भी सहसा दुर्ग के बाहर अपने परिवार के साथ निकल पड़े। मुगलों ने बहुत प्रयत्न किया, पर उस धर्मात्मा की विकट मार से विमुख होकर उनको अथवा उनके परिवार के किसी सदस्य को पकड़ सकने में सफल न हो सके। उस आपत्ति से वे सब निकल तो गये लेकिन बिछुड़ गये। गुरु गोविंद सिंह अपने दो बड़े बेटों के साथ एक ओर जा पड़े। उनकी माता अपने दो छोटे पोतों के साथ एक ओर, उनकी पत्नी एक ओर अकेली जा पड़ी। इस प्रकार बिछुड़कर गुरु गोविंद सिंह तो पुत्रों के साथ चमकौर जा पहुँचे, उनकी माता दोनों पोतों के साथ अपने रसोइये गंगू के अनुरोध पर उसके घर चली गईं और पत्नी किसी प्रकार दिल्ली पहुँचकर एक भक्त के यहाँ प्रच्छन्न हो गईं।

चमकौर दुर्ग के बहुत ही थोड़े से सैनिक थे, साधन-सामग्री भी नहीं के बराबर थी। तथापि गुरु ने हिम्मत से काम लिया और सारे लोगों में पीछा करती आ रही मुगल सेना से जूझने का उत्साह प्रेरित किया। सभी लोग सजग तथा सनद्ध होकर शत्रु की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ ही समय में विशाल मुगल सेना ने आकर चारों ओर से चमकौर के दुर्ग को घेर लिया। सामग्री के अभाव में किले के भीतर रहकर युद्ध चला सकना संभव न था। अस्तु गुरु गोविंद सिंह ने कहा कि आप जो थोड़े से लोग हैं, वे किले में, इन बच्चों के साथ रहें और जब अवसर पायें तो किसी सुरक्षित दिशा में निकल जाएँ और जब तक यवनों का अत्याचार समाप्त न हो जाए तब तक धर्म-युद्ध चलाते और दूसरों को चलाते रहने की प्रेरणा देते रहें। मैंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज निश्चय कर लिया है कि अकेले ही जाकर शत्रु की सेना से लोहा लूँगा और धर्म पर बलिदान होकर अकाल पुरुष की गोद में चला जाऊँगा। मुझे स्पष्ट दिखलाई दे रहा है कि समय मेरा बलिदान चाहता है। आशा है—उसकी माँग पूरी कर देने पर देश में पुनः धर्म-रक्षा का वही ज्वार आ आयेगा, जो पिताजी के बलिदान से आया था।"

गुरु गोविंदसिंह का निश्चय सुनकर उनके दोनों पुत्र तथा साथी करुण हो उठे। उन्होंने प्रार्थना की—"यदि समय बलिदान ही चाहता है तो पहले हम अपना बलिदान देंगे। आपका सुरक्षित रहना बहुत आवश्यक है। आप सुरक्षित रहेंगे तो न जाने कितने धर्म-रक्षक वीर पैदा कर सकेंगे। आपके सहसा बलि हो जाने से देश के जागरण में निराशा आ जायेगी। यवनों का अन्याय अभी कम नहीं हुआ है। इस समय केवल आप ही देश के आशा केंद्र बने हुए हैं। अन्याय के विरुद्ध देश में जन जागरण तथा संगठन का काम करने के लिए आपका जीवित रहना नितांत आवश्यक है।

साथियों की प्रार्थना सुनकर गुरु गोविंद सिंह सोच में पड़ गये और बोले—फिर भी तो शत्रुओं से इस प्रकार कायरतापूर्वक घिरे रहना भी तो ठीक नहीं, उनकी रण-लिप्सा पूरी करना आवश्यक है। इस समय मेरे सिवाय उनसे लोहा लेने के लिए जाने वाला कौन है ?

पिता की बात सुनकर उनके अठारह वर्षीय कुमार अजीतसिंह ने हाथ जोड़कर कहा—"पिताजी मेरे रहते हुए आपको इस प्रकार से निराश नहीं होना चाहिए। युद्ध के लिए मुझे आज्ञा दीजिए और देखिये कि मैं किस प्रकार इन आततायियों के छक्के छुड़ाता हूँ ? आप विश्वास रखिए—या तो मैं इस विशाल शत्रु सेना को मार-काटकर विजय प्राप्त करूँगा अथवा अपना बलिदान देकर भारत माता का गौरव और अपना जीवन उज्ज्वल बना लूँगा।"

अजीतसिंह का उत्साह देखकर गुरु गोविंद सिंह हर्ष-विभोर हो उठे—वे बोले—"धन्य है पुत्र ! जिस देश-जाति में तुम जैसे बालक पैदा हों, उसे अधिक दिनों तो कौन सता सकता है ? लेकिन तुम भी बहुत छोटे हो। युद्ध में, सो भी निश्चित मृत्यु के युद्ध में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भेजना उचित नहीं लगता ! हम सब साथ ही चलकर आज धर्म-रक्षा में अपना अंतिम बलिदान दे देंगे।"

अजीतसिंह ने पुनः प्रार्थना की कि—"आपका सुरक्षित रहना बहुत आवश्यक है। बहुत-सा कार्य करने के साथ ही आपको मेरे तीन भाईयों का पोषण तथा निर्माण करना है। अपने जीते जी मैं आपको असमय बलिपथ पर नहीं जाने दूँगा। आप मेरी आयु की ओर न देखें। अभिमन्यु केवल सोलह वर्ष का था, मेरी आयु तो अठारह वर्ष की है। मैं भी उसी देश, उसी आर्य जाति और उन्हीं वीर परंपराओं की एक कड़ी हूँ, जिसके कि अभिमन्यु थे। आप मोह को छोड़कर युद्ध में जाने की आज्ञा दीजिए और उस सबको दोहरा देने दीजिए जो कुछ दुर्भेद्य चक्रव्यूह में वीर अभिमन्यु ने किया था।

गुरु गोविंद सिंह अपने हाथ से बेटे को कवच और झिलम पहनाया और अपने हाथ सिरोही देकर कहा—"जा भारत माता के वीर सपूत, जा और रणांगन में अपने वंश, अपने धर्म और अपनी परंपराओं का परिचय दें।"

अजीतसिंह कतिपय सिख सैनिकों को लेकर किले से निकला और अकाल पुरुष की जय बोलकर बाज की तरह शत्रु सेना पर टूट पड़ा। उस धर्म प्राण बालक ने मुगल सेना को ऐसे काटना प्रारंभ किया जैसे किसान पके खेत को काटकर गिरा देते हैं। देखते ही देखते उसने बहुत से मुगल सरदारों को नरक के घाट लगा दिया और समुद्र की तरह उस विशाल सेना को विक्रांत मकर की तरह मथकर फेंक दिया। गुरु गोविंद सिंह किले के ऊपर से अपने पुत्र का जौहर देखकर पुलकित हो रहे थे।

जब मुगल सरदारों ने देखा कि यह काल का कराल अंश बालक सेना को मथे डाल रहा है, तो उन सैकड़ों ने एक साथ ही चारों ओर से उस वीर बालक को घेर लिया। उस पर एक साथ सैकड़ों तीर, सैकड़ों बरछे, सैकड़ों तलवारें और सैकड़ों गोलियाँ बरसाने लगीं। तब भी उस वीर ने संध्या होते-होते हजारों को अपनी तलवार का विषैला पानी पिलाकर सदा के लिए सुला दिया। पश्चिम की ओर जाते भगवान् भुवन भास्कर ने देखा कि उसकी किरण के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समान ही प्रज्ज्वलित एक नन्हीं-सी ज्योति शिखा उस शत्रु सेना के तमस में पूरे दिन दमकी और अस्त हो गई। गुरु गोविंद सिंह और उनके साथियों की आँखों में आँसू और मुख से धन्य-धन्य के शब्द एक साथ निकल पड़े और वे नीचे उतर गये ! किंतु वे आँसू शोक के नहीं, आनंद और गौरव के थे।

दूसरे दिन प्रातः काल गुरु गोविंद सिंह सोच रहे थे कि अब क्या किया जाए कि तब तक उनके पंद्रह वर्षीय पुत्र जोरावर सिंह ने आकर प्रार्थना की—"पिताजी, मुझे भी भाई की तरह ही युद्ध में जाने की आज्ञा दीजिए, मैं भी उनका अनुसरण करूँगा। आज का दिन मेरे बलिदान का दिन है।" गुरु गोविंद सिंह उसकी भोली सूरत की ओर देखकर चिंता में पड़ गये, तभी बालक ने फिर कहा—"मालूम होता है, आप मुझे इस पुण्य-बलिदान से वंचित कर देने की सोच रहे हैं। यदि आपने ऐसा किया तो मैं यही समझूँगा कि पिता ने न्याय नहीं किया और मेरी वीरता पर अविश्वास रक्खा। भाई को धर्म पर बलिदान हो जाने का अवसर देकर यदि आप मुझे वंचित करेंगे तो मेरी दृष्टि में पक्षपाती ठहरेंगे। मेरी प्रार्थना है कि आज, आप मुझे युद्ध में जाने की आज्ञा दें।" पिता ने कहा—पर बेटे तुम अभी पंद्रह साल के ही हो—ऐसी कम आयु में''। पिता का वाक्य पूरा भी न हो पाया कि जोरावर सिंह ने तत्काल कहा—"पिताजी गोरा बादल तो केवल ग्यारह-बारह वर्ष के ही थे।" छोटे की बात सुनकर गुरु गोविंद सिंह को सहसा हँसी आ गई और उन्होंने यह कहते हुए कि—"जा वीर तू भी जा मुझे क्या अधिकार है कि मैं किसी वीर को उसके अभीष्ट पक्ष से रोक सकूँ ?"—कवच और झिलम पहनाकर विदा कर दिया।

नादान बच्चे को युद्ध में आया देखकर अपनी-अपनी प्रवृत्ति के अनुसार बहुतों को हँसी आ गई तो बहुतों की तलवारें शर्म से नीचे हो गईं और बहुत क्रूर आततायी उस पर आक्रमण करने को दौड़ पड़े। युद्ध हुआ और तीन पहर तक शत्रुओं का विनाश करने के बाद वह बाल वीर भी सहसा सैकड़ों सरदारों द्वारा चारों तरफ से घेर लिया गया। उसकी एक भुजा कट गई, एक पैर भी जाता रहा। फिर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी वह घोड़े पर सवार उन अत्याचारी शत्रुओं से लोहा लेता रहा। पर अंत में जब उसके शरीर में एक साथ कई गोलियाँ लग गई तब वह वीर 'सत् श्री अकाल' के ब्रह्मघोष के साथ गिरकर सदा-सर्वदा के लिए अमर हो गया। गुरु गोविंद सिंह ने एक उच्छ्वास भरा और किले से नीचे उतर गये।

पुत्रों का बलिदान देकर गुरु गोविंद सिंह एक योजना बनाकर आधी रात के घोर अंधकार में अपने शेष साथियों के साथ किले से निकलकर एक ओर चल पड़े, उनके साथी ठीक दूसरी ओर यह कहते हुए दौड़ पड़े—कि गोविंद सिंह भागा जा रहा है, गोविंद सिंह भागा जा रहा है—दौड़ो, पकड़ो।" मुगलों ने समझा कि उनके साथी चिल्ला रहे हैं। सबके सब उसी दिशा में दौड़ पड़े, दूसरी दिशा में जिधर गोविंद सिंह जा रहे थे किसी का ध्यान ही न गया। गुरु गोविंद सिंह तो इस योजना के अनुसार सुरक्षित निकल गये, पर पता चलने पर वे सिक्ख सैनिक मुगलों के द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये।

चमकौर से चल कर जिस समय गुरु गोविंद सिंह अकेले पैदल ही जंगलों, पहाड़ों, नदी-नालों तथा आपत्तियों को पार करते हुए मालवा की ओर जा रहे थे। उस समय आनंदगढ़ से गुरु के शिष्यत्व से त्यागपत्र देकर गये वे चालीस सैनिक अपने-अपने घरों पर पहुँचे। लोगों ने उनका और गुरु गोविंद सिंह का समाचार पूछा ! जब पता चला कि यह कायर आपत्ति में गुरु का साथ छोड़कर चले आये हैं तो उनके घर की स्त्रियों तक ने उन्हें धिक्कारा और कहा कि, इस प्रकार धर्म से मुँह तोड़कर और गुरु का साथ छोड़कर तुम्हें शर्म नहीं आई। जिस मौत से डरकर तुम घर भाग आये हो, यहाँ क्या बच जाओगे ? बल्कि यहाँ तो बिस्तर पर पड़कर और भी निकृष्ट मौत मरोगो। यदि धर्म में प्राण दे दिये होते तो निश्चय ही स्वर्ग के अधिकारी बनते। इस प्रकार वे जिधर जाते उन्हें धिक्कार और लांछन का पात्र बनना पड़ता था। उन्हें अपनी स्थिति तथा भूल का आभास हुआ और तुरंत ही गुरु की खोज करते हुए घरों से चल दिये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इधर विश्वासघाती गंगू रसोइये की अक्ल पर पत्थर पड़ गये। वह पापी अपने घर में आश्रय लिए गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों तथा माता से घात करने की सोचने लगा। उसका मन उनकी उस जेवरात तथा जवाहरात की पिटारी पर ललचा उठा, जो आपत्तिकाल के लिए माताजी अपने साथ ले आई थी। एक दिन उसने वह पेटी गायब ही कर दी और जाहिर कर दिया कि चोरी हो गई, पर उसका पापी मन आश्वस्त न हो सका। उसे डर था कि माता ने उसकी चाल समझ ली है। निदान उसने उन्हें समाप्त कर देने की ठानी। किंतु उसे उन सिंह संतानों और सिंह जननी पर हाथ उठाने की हिम्मत ही न पड़ी। उस लोभी ने सोचा कि, यदि उन सबको सरहिंद के सिपाहियों द्वारा गिरफ्तार करा दूँ तो यह पेटी तो मेरी हो ही जायेगी, साथ में नवाब की तरफ से भी बहुत-सा इनाम मिलेगा और एक दिन उसने वैसा ही किया।

नवाब सरहिंद के पास जाकर उसे गुरु गोविंद सिंह की माता और उनके पुत्रों की खबर दे दी। वे सब गिरफ्तार कर लिये गये ! पर जब गंगू ने नवाब से इनाम के लिए प्रार्थना की तो उसने यह कहकर उसे जल्लादों के सुपुर्द कर दिया कि इस कौमी गद्दार को भी ले जाकर कुत्ते की मौत मार डालो। जल्लाद उस विश्वासघाती को ले गये और उसके टुकड़े-टुकड़े करके चील-कौवें को खिला दिये। एक देशद्रोही, विश्वासघाती का जो अंत होना चाहिए, वही गंगू रसोइये का हुआ।

मालवा की ओर खुले रास्ते से जाना निरापद नहीं था। जगह-जगह हर शत्रु के सैनिक उनकी खोज में घूम रहे थे। इसलिए गुरु गोविंद सिंह जंगली रास्तों से झाड़-झंखाड़ों को पार करते हुए और वृक्षों के नीचे रात बिताते हुए यात्रा कर रहें थे। इस यात्रा में उनके पास न घोड़ा था और न कोई साथी। इस आपत्तिपूर्ण एकाकी स्थिति में वे यदा-कदा नियति-चक्र की गति पर विचार करने लगते। वे सोचते—"मनुष्य जीवन में सफलता-असफलता, आशा-निराशा, संपत्ति-विपत्ति का उसी प्रकार साथ है जिस प्रकार दिन और रात का। वह दिन अभी दूर नहीं गया है, जब मेरे साथ हजारों लोग थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेरे एक संकेत पर लोग प्राण हथेली पर रखकर युद्ध में ऐसे चल देते थे, मानों किसी उत्सव में भाग लेने जा रहे हों। मेरे एक-एक शब्द से लोगों को प्रेरणा मिलती थी और लोग मेरे बतलाये पथ पर चल पड़ते थे।"

"मेरा एक परिवार था, माता, पत्नी और चार बेटे। दो तो मेरे देखते-देखते युद्ध-देव की भेंट चढ़ गये। दो का पता नहीं, कहाँ भटक रहे होंगे ? कौन जाने, वे जीवित भी होंगे या आततायियों ने उन्हें कहीं पाकर शहीद कर दिया होगा ? मेरी माता, जिनकी मैं पूजा किया करता था, न जाने कहाँ ठोकरें खा रही होंगी ? पत्नी, जिसका आजीवन साथ निभाने के लिए वचनबद्ध था, नियति-चक्र के वेग में पड़कर न जाने कहाँ पहुँची होगी ? मैं एकाकी इस जंगल में भटक रहा हूँ।"

यह विषम तथा दुःखद स्थिति जिसे लोग दुर्भाग्य अथवा दुर्विपाक समझकर खिन्न, दुःखी और निराश होने लगते हैं, यथार्थ में मनुष्य की सहनशीलता, धीरता और कर्तव्यनिष्ठा की परीक्षा-कसौटी हुआ करती है। शिथिल संकल्प के लोग ऐसी दशा में घबराकर निराश हो जाते हैं और प्रायः कर्तव्य से विमुख हो जाते हैं। कर्तव्य बड़ा कठोर होता है, उसके निर्वाह के लिए कभी-कभी मनुष्य को संसार के सारे संबंधों और सारी संपदाओं से विमुख होना पड़ता है। आज वही कसौटी मेरे सामने उपस्थित है। किंतु अपनी धर्म निष्ठा के बल पर मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं इस कठोर परीक्षा को दे सकूँगा और उत्तीर्ण होऊँगा। जो धीर पुरुष धर्म का साथ नहीं छोड़ता, धर्म उसे हर आपत्ति से पार लगा देता है। धर्म में जीवन है, प्राण है, गुरु, बंधु और सखा है। मैं उसे नहीं छोड़ सकता और उस कर्तव्य से भी विमुख नहीं हो सकता, जिसे मैंने ठीक समझकर ग्रहण किया है। इसके लिए चाहे मुझे इससे भी अधिक विपत्तियों में से गुजरना पड़े।

विचार शृंखला के टूटने पर गुरु गोविंद सिंह ने देखा कि वे एक गाँव में आ गये हैं। उन्हें शंका हुई कि कहीं शत्रुओं के हाथ में न पड़ जाऊँ। उस गाँव का नाम मछबाड़ा था। वहाँ के दो पठानों ने गुरुजी के देख और पहचान लिया। वे पास आये और प्रणाम करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बोले—"महाराज, अब आप आगे न जाएँ। चारों और मुगलों की सेना पड़ी हुई है और बड़ी तत्परता से आपकी खोज की जा रही है। यद्यपि हम मुसलमान हैं। फिर भी आपके शुभचिंतक हैं। हम जानते हैं कि आप हिंदू-मुसलमान का सवाल लेकर नहीं लड़ रहे हैं। आप अन्याय के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं। आपने न्याय के लिए अपनी संपत्ति और परिवार तक को बलिदान कर दिया है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। आततायी और अन्यायी, चाहे वह हिंदू हों या मुसलमान, असामाजिक ही होता है। उसका विरोध होना ही चाहिए और उस विरोध में हर एक आदमी को शामिल होना चाहिए, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान ! जो न्याय के लिए लड़ रहा हो, अन्याय को मिटाने के लिए संघर्ष कर रहा हो, उसका साथ सबको देना ही चाहिए। हम आपकी और कोई सेवा तो नहीं कर सकते, यहाँ से सुरक्षित जरूर निकाल देंगे।"

उन पठानों का व्यवहार देखकर गुरु गोविंद सिंह सोच उठे। यह एक मुसलमान है, जो आपत्तिग्रस्त अन्य धर्मावलंबी की सहायता करना चाहते हैं और एक वे मुसलमान हैं, जो निर्बलों तथा निरपराधियों पर अत्याचार करते हैं। अच्छा-बुरा होना हिंदू या मुसलमान होने पर निर्भर नहीं, बल्कि यह मनुष्यों का अपनी प्रवृत्तियों के अनुसार एक स्वभाव होता है।

उन पठानों ने गुरुजी को मुसलमान-मौलवियों के वेश में अपने कंधों पर चढ़ा कर खतरे से बाहर निकाल दिया। गुरु गोविंदसिंह धनाली ग्राम होते हुए रायगढ़ पहुँच गये। रायगढ़ में गुरु का आगमन सुनकर फिर लोग अस्त्र-शस्त्र ले-लेकर उनके पास एकत्र होने और युद्ध की तैयारी करने लगे।

जिस समय गुरु गोविंद सिंह रायगढ़ में पुनः युद्ध की तैयारी कर रहे थे, उस समय नवाब सरहिंद उनके दोनों नन्हें बालकों को मुसलमान बनाने का प्रयत्न कर रहा था। उसने उन्हें अपने सामने पेश कराया और कहा—तुम दोनों बड़े प्यारे बच्चे हो। माना कि तुम मुसलमानों के दुश्मन गोविंद सिंह के लड़के हो, तब भी हम तुम्हारी छोटी उम्र को देखकर कर माफ कर देंगे। तुम दोनों मुसलमान हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाओ। हम तुम्हारी शादियाँ शहजादियों से करा देंगे और जागीर बख्श देंगे। सुख-चैन की जिंदगी काटना।

उन सात और नौ साल के सिंह बच्चों ने तुरत उत्तर दिया कि—"नवाब, ऐसी बात मुँह से मत निकालो। कहीं अपना धर्म छोड़कर दूसरों का धर्म ग्रहण किया जाता है। धर्म के मूल्य पर सुख-चैन की कामना करने वाले कायर नरक्र के कीड़े बनते हैं। जिसके कुल ने अपने धर्म की रक्षा में सर्वस्व बलिदान कर दिया है, वे मुसलमान हो जायेंगे, ऐसी आशा आपने किस भ्रम सें बना ली ?"

नवाब ने उन्हें धमकाया, मरवा डालने की धमकी दी, पर वे दोनों अपने धर्म पर पर्वत की तरह अटल बने रहे। उनकी निर्भीकता, दृढ़ता और धर्मनिष्ठा देखकर नवाब सरहिंद जल-भुन कर खाक हो गया। उसने दरबार को संबोधित करके कहा कि आप लोग बतायें कि इन काफिर सपोलों को क्या सजा दी जाए ? दरबार के हर विवेकशील व्यक्ति ने कहा कि यह तो अभी बच्चे हैं, निरपराध हैं, इनके कोई भी सजा न दी जानी चाहिए। ये रहम और मोहब्बत के हकदार हैं। इन्हें माफ किया जाए और रिहा कर दिया जाए। किंतु धर्मांध नवाब को उनकी राय पसंद न आई। वह तो उन्हें मुसलमान बनाने या प्राण ले लेने पर उतारू था। उसने फिर उनसे मुसलमान हो जाने के लिए कहा, पर जब वे किसी प्रकार न माने तो उसने उन्हें किले की दीवार में चुनवा देने का हुक्म दे दिया।

उन वीर बालकों की दीवार में चुनवाई शुरू हो गई। नवाब सरहिंद खड़ा-खड़ा यह पाप देखता रहा। बीच में उसने फिर कहा—"लड़कों ! अगर अब भी तुम मुसलमान होना मंजूर कर लो तो सीने तक आई यह दीवार अब भी तोड़ी जा सकती है। नहीं तो यह पूरी कर दी जायेगी और तुम उसमें दबकर मर जाओगे।" बच्चों ने मुस्कराते हुए फिर उत्तर दिया, नवाब जुबान बंद करो, इस प्रकार धर्म पर बलिदान हो जाने से बढ़कर जिंदगी का और क्या महत्त्व हो सकता है ? दीवार आगे बढ़ी और छोटे भाई की आँखों तक जा पहुँची। यह देखकर बड़े भाई जुझारसिंह की आँखों में आँसू आ गए। नवाब समझा शायद बालकों का धैर्य और साहस जाता रहा है। वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मौत को मुख के पास देख़कर डर गये। वह बोला अब भी समय है। यदि मुसलमान हो जाओं तो अपने प्राण बचा सकते हो।" बड़े भाई ने तुरंत उत्तर दिया, "जीवन तो नश्वर है। उसे एक दिन नष्ट ही होना है, उसके लालच में आकर धर्म से च्युत होने का क्या अर्थ ? तब तुम्हारे आँखों में आँसू क्यों ? नबाव ने फिर पूँछा। जुझारसिंह ने कहा—"संसार में पहले मैं आया। देश-धर्म पर पहले मुझे बलिदान होना चाहिए। किंतु देख रहा हूँ कि यह गौरव मेरा छोटा भाई लिए जा रहा है। इसी दुःख से मेरी आँखें गीली हो गई हैं।" बच्चे की बात सुनकर सभी के मस्तक आदर में नत हो गये। किंतु नवाब सरहिंद तो अपने सिर कलंक लेना ही चाहता था। उसने अंतिम ईंटें रखने का आदेश दे दिया इधर जल्लाद ईंटें रखने का उपक्रम कर रहा था और उधर यह पवित्र वाणी गूँज रही थी—

'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि ग्रह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

गीता (२-२२)

दीवार पूरी हो गई और गुरु गोविंद सिंह के वे दोनों नौनिहाल सदा-सर्वदा के लिए उसमें समाहित हो गये। किंतु तब भी चलते समय लोग दूर तक उस बलिसमाधि से निकलती हुई 'ओ३म्-ओ३म्' की प्रणव प्रतिध्वनि सुनते ही रहे।

रायकोट में अपने दोनों छोटे पुत्रों के बलिदान का समाचार पाकर गुरु गोविंद सिंह हर्ष से गद्‌गद् हो उठे। उनकी आँखों में आनंद की अश्रुधारा बह चली। वे बोले—"जिस पवित्र धर्म पर ऐसे-ऐसे बच्चे स्वाभिमानपूर्वक अपना बलिदान देने लगे, उस धर्म को संसार में कौन मिटा सकता है ? जल्दी ही अत्याचारियों का अंत होगा और देश के सुदिन फिर लौटेंगे।"

रायकोट से संगठन करते हुए जिस समय गुरु गोविंद सिंह नादेड़ पहुँचे, उस समय उन्हें पता चला कि यहाँ पर एक बड़ा वीर वैरागी रहता है। किंतु कतिपय कारणों से उसे वैराग्य हो गया और वह तरुण अवस्था में ही संन्यास लेकर वनवासी हो गया है। गुरु जी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुरंत उसके पास पहुँचे और बोले—"वैरागी, क्या तुम्हें देश-धर्म पर छाई हुई आपत्ति का आभास नहीं होता ? संत का कर्तव्य तो पीड़ितों का कष्ट दूर करना है। पर तुम ऐसे संत हो कि जिस समय देश-धर्म को तुम्हारी सेवाओं की आवश्यकता है, उस समय तुम एकांत सेवन करते हुए वन में बैठे हुए हो। केवल भजन से ही किसी को मुक्ति नहीं मिलती। इसके लिए संसार में सत्कर्म भी करने होते हैं। जिस समय समाज पर आपत्ति के बादल बरस रहे हों, उस समय केवल अपनी मुक्ति के लिए समाज से दूर रहकर प्रयत्न करना घोर स्वार्थ है। इसका प्रतिपादन करने से मनुष्य को मुक्ति नहीं मिल सकती। आज की सच्ची साधना देश-धर्म के लिए लड़ते-लड़ते मर जाना है। इसलिए उठो और देश-धर्म के प्रति अपने वास्तविक कर्तव्य का पालन करो।"

गुरु गोविंद सिंह के प्रेरणा भरे वचन सुनकर वह वैरागी, जो बंदा के नाम से प्रसिद्ध था—उठा और गुरु से शस्त्र लेकर पंजाब की ओर चल दिया। पंजाब में उसने धर्म सेना का संगठन किया और पंजाब में धर्मयुद्ध की दुंदुभी बजा दी। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में बंदा और उसके साथियों की विजय हुई। सरहिंद का नबाव और सेना मारी गई, बंदा ने पंजाब का पूरा प्रदेश जीतकर उस पर हिंदू-धर्म का झंडा फहरा दिया और इस प्रकार एक वीर ने अपने साथियों के सहयोग से सदियों से चला आ रहा मुसलमान शासन पंजाब से उखाड़ फेंका।

गुरु गोविंद सिंह को जब इस विजय का पता लगा तो वे बड़े प्रसन्न हुए और लोगों से कहने लगे—"अब लोगों को और भी संगठित तथा सावधान हो जाना चाहिए, क्योंकि सरहिंद की पराजय से खिन्न होकर दिल्ली का बादशाह और पंजाब के आस-पास के यवन शासक मिलकर पंजाब में अंकुरित स्वतंत्रता के पौधे को उखाड़ फेंकने का प्रयत्न करेंगे।

गुरु गोविंद सिंह का अनुमान ठीक निकला। दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने तीस-चालीस हजार सेना और उसके नायक अब्दुलसमंद खाँ को पंजाब में संगठन तथा वीर बंदा को मिटा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डालने के लिए भेजा। अब्दुलसमंद ने पंजाब के आस-पास के यवन शासकों को संगठित किया और कई लाख सेना लेकर बंदा पर आक्रमण कर दिया। वीर बंदा वैरागी ने भी वहाँ के हिंदू राजाओं को संगठित किया, किंतु वे सदा तो विलास की नालियों में पड़े देश-धर्म को भूले हुए थे। वीर बंदा वैरागी उस विशाल भववाहिनी में घिर गया। उसकी सेना तथा खाद्य सामग्री कम हो गई। भूखों मरने की स्थिति हो गई। विवश होकर उसने अपने शेष साथियों को लेकर शत्रु से जूझ जाना ही ठीक समझा।

निदान वह अपने बचे हुये थोड़े से साथियों को लेकर यवनों की विशाल सेना में धँस गया और ऐसा भयंकर युद्ध किया कि उनके छक्के छूट गये, किंतु अंत में एक-एक साथी के मर जाने पर वह वीर भी बंदी हो गया।

वीर बंदा वैरागी को गिरफ्तार करके दिल्ली लाया गया। औरंगजेब ने उनके सामने मुसलमान हो जाने का प्रस्ताव रखा। उसने उसके प्रस्ताव घृणा प्रकट करते हुए कहा—"नासमझ बादशाह ! तुम प्राणों का भय दिखलाकर एक धर्मवीर को उसके धर्म से विचलित नहीं कर सकते।" औरंगजेब ने बंदा के शरीर की बोटी-बोटी गरम चीमटों से बाहर निकलवा ली। यहाँ तक कि उसकी हड्डियों का ढाँचा मात्र शेष रह गया। किंतु वह अपने धर्म से न तो विचलित हुआ और न उसने आह भरी। अंत में वह हँसता-हँसता 'सत् श्री अकाल' का घोष करते हुए भूमि पर गिरकर स्वर्ग सिधार गया।

गुरु गोविंद सिंह उन दिनों गोदावरी के तट पर नगीना नाम का एक घाट बनवा रहे थे। दिन भर उस काम में व्यस्त रहकर वे सायंकाल प्रार्थना कराते और लोगों को संगठन तथा बलिदान का उपदेश दिया करते थे। उन दिनों उनके पास अनेक मुसलमान शिष्य भी रहते थे। किंतु उन मुसलमान भक्तों में एक शत्रु भी छिपा हुआ था, उसका नाम अताउल्ला खाँ था। उसका पिता पैदे खाँ एक युद्ध में गुरुजी के हाथ से मारा गया था। उसके अनाथ पुत्र को गुरुजी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आश्रय में रखकर पाल लिया था। किंतु उनकी यही दया और शत्रु के पुत्र के साथ की गई मानवता उनके अंत का कारण बन गई।

दुष्ट अताउल्ला खाँ हर समय इस घात में रहता था कि कब गुरु जी के अकेले में असावधान पाएँ और मार डालें। निदान एक दिन उसने पलंग पर सोते हुए गुरुजी की काँख में छुरा भोंक दिया। गुरुजी तत्काल सजग होकर उठ बैठे और वही कटार निकालकर भागते हुए विश्वासघाती को फेंककर मारी ! वह कटार उसकी पीठ में घुस गई। अताउल्ला खाँ ने तुरंत गिरकर ढेर हो गया।

गुरु के घाव पर टाँके लगा दिये गये। सायंकल उन्होंने प्रार्थना सभा में लोगों को बतलाया कि मेरी इस घटना से शिक्षा लेकर हर सज्जन व्यक्ति के यह नियम बना लेना चाहिए कि यदि शत्रु पक्ष की, निराश्रय की स्थिति में सहायता भी करनी हो तो भी उसे अपने निकट न रखना चाहिए और सदा उससे सावधान रहना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी असावधान परोपकार भी अनर्थ का कारण बन जाता है।

तभी औरंगजेब मर गया और बहादुरशाह ने धार्मिक अत्याचार बंद कर गुरु से संधि कर ली। उसने गुरुजी की सेवा में बहुत से अस्त्र-शस्त्र तथा धन भेजा ! उसी के साथ एक ऐसी कमान भेजी, जो सामान्यतः लोगों से उठती भी न थी। पर गुरु गोविंद सिंह ने उसे बलपूर्वक झुकाकर चढ़ा दिया। इसी क्रिया में उनके जख्म के टाँके टूट गये और रक्त की धारा बह चली। गुरु गोविंद सिंह चारपाई पर पड़ गये। उनके घाव के रक्त-प्रवाह को रोकने के लिए बहुत प्रयत्न किया गया, पर वह न रुका और उसी से कार्तिक ८, संवत् १७६५ में उनका स्वर्गवास हो गया।

❐ ❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org